

# महिला जागृति: नवयुग का सूर्योदय

अध्याय ५ से ८: सामाजिक, तार्किक और वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में नारी सशक्तिकरण का यथार्थ।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# नारी नेतृत्व: भारत की गौरवशाली परम्परा

**अतीत: संघमित्रा और आम्रपाली**  
→ सुविधाओं का त्याग  
→ विश्व कल्याण एवं बौद्ध मठों के संगठन निर्माण में सफलता।

**संक्रमण काल:**  
मध्यकाल का अंधकार  
→ देहाती क्षेत्रों में अशिक्षा, दयनीय स्थिति एवं अधिकारों का हनन।

**वर्तमान एवं भविष्य:**  
पंचायती राज में ३०% आरक्षण  
→ शासन व न्याय व्यवस्था में प्रत्यक्ष भागीदारी → राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान की पुनर्स्थापना।

## वसन्त पंचमी

१९१० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित  
श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# महापरिवर्तन अनायास नहीं होते

बुद्ध और गाँधी:  
विश्व कल्याण का लक्ष्य + कठोर त्याग

दैवी अनुग्रह /  
ईश्वरीय  
योजना

+

असाधारण  
पुरुषार्थ /  
अदम्य साहस

=

युग  
अवतरण  
(नारी पुनरुत्थान)

हनुमान और अर्जुन:  
महाप्रतापी जन्म + असाधारण पुरुषार्थ

मात्र शिक्षा और नौकरी पर्याप्त नहीं है;  
सदियों पुरानी वैचारिक मान्यताओं से संघर्षपूर्ण सुधार अनिवार्य है।

## वसन्त पंचमी

१९१० को वन्दनीया माताजी से — 'मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।'

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित  
श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# मूढ़ मान्यताओं का कुहासा: प्रतिभा का हास कैसे होता है?

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित  
श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

**४. राष्ट्रीय घाटा:**  
आधी जनसंख्या का अपंग  
होना = पूरे समाज और राष्ट्र  
की प्रगति का रुकना।

**१. हेय मानसिकता:** नारी  
को 'पराये घर का कूड़ा' या  
केवल 'कामिनी/भोग्या' मानना।

**३. मौलिक प्रतिभा का नाश:**  
विकास, शिक्षा और प्रगति के  
सभी अवसरों की समाप्ति।

**२. असुरक्षा व पराधीनता:**  
अधिकारों से वंचित कर, घर  
की चहारदीवारी में दासी के  
रूप में कैद करना।

## वसन्त पंचमी

१९१० को वन्दनीया  
माताजी से — 'मेरा  
ज्ञान शरीर ही जिन्दा  
रहेगा। ज्ञान शरीर का  
प्रकाश जन-जन के  
बीच में पहुँचना ही  
चाहिए और आप  
सबसे कहियेगा — सब  
बच्चों से कहियेगा  
कि मेरे ज्ञान शरीर  
को मेरे क्रान्तिधर्मी  
साहित्य के रूप में  
जन-जन तक पहुँचाने  
का प्रयास करें।'

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित  
श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# संघर्ष से सम्मान की ओर: मनोवैज्ञानिक उदय

**कानूनी अधिकार:**  
पंचायत एवं शासन में  
प्रत्यक्ष भागीदारी।

**आत्मविश्वास का उदय:**  
शासित और विवश बने  
रहने की मानसिकता से  
मुक्ति।

**पारिवारिक दृष्टिकोण:**  
सत्ता में भागीदारी से पूरे  
परिवार के सम्मान में वृद्धि।

**सामाजिक सुयोग्यता:**  
नेतृत्व और मतदान में  
सफलता हेतु उच्च शिक्षा  
को अनिवार्य प्रोत्साहन।

## वसन्त पंचमी

१९१० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’

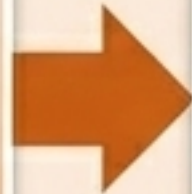
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित  
श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# महाकाल का प्रथम आश्वासन: शिक्षा और समानता

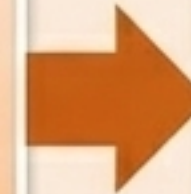
नारी शिक्षा का  
द्रुत विस्तार



रोजगार के  
साथ हर क्षेत्र में  
समान अवसर



अनीतिमूलक  
बन्धनों (जैसे  
पर्दा प्रथा) का  
टूटना



स्वतंत्र एवं  
निर्भय  
वातावरण में  
जीवन

**तथ्य:** यह केवल एक सामाजिक सुधार नहीं, अपितु 'युगचेतना' का उद्घोष है।  
समय की इस प्रचंड धारा के विपरीत खड़ा रहना अब किसी के लिए भी असंभव है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — 'मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।'

## वसन्त पंचमी

१९९० को वन्दनीया माताजी से — 'मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।'

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित  
श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

## वसन्त पंचमी

१९१० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित  
श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# मानसिकता का परिमार्जन

रूढ़िवादी मान्यता  
(अस्वीकार्य)

पुत्र जन्म पर बधाई,  
कन्या पर विलाप

बेटी को ‘पराये घर का  
कूड़ा’ मानना

परदे व पिंजड़े में कैद  
(अनुभवहीन)

युगचेतना का दृष्टिकोण  
(नया युग)

दोनों के जन्म पर  
समान उल्लास

दोनों घरों की  
‘गृहलक्ष्मी’ मानना

घर और समाज में  
निर्भय आवागमन

# विवाह: प्रगति का अंत नहीं, विस्तार



अभिभावकों के  
घर शिक्षा-दीक्षा



विवाह: सहमति  
और सहकारिता  
का पवित्र बंधन



ससुराल का  
उत्तरदायित्व:  
योग्यता-सम्बर्द्धन  
जारी रखना



आजीवन प्रगति  
एवं  
स्वावलंबन



**वैज्ञानिक तथ्य:** बाल-विवाह या विवाह के बाद शिक्षा रोक देने से महिलाएँ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य गँवा बैठती हैं। कैदी-जीवन का यह मनोवैज्ञानिक दुष्प्रभाव उनकी मौलिक क्षमताओं को कुंठित कर देता है।

**वसन्त पंचमी १९९०** को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित  
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# विवाह का वास्तविक अर्थ: शोषण नहीं, सहकार

पति-पत्नी का रिश्ता सहयोगी, प्रगतिशील और  
और पवित्र होना चाहिए (शोषण-मुक्त)।

 **कर्त्तव्य:** पति का नैतिक दायित्व है कि वह पत्नी को अपनी बौद्धिक योग्यता के स्तर तक पहुँचाए।



**उपेक्षा का परिणाम:** यदि प्रगति रोकी गई और केवल उपभोग किया गया, तो यह विवाह नहीं, ‘अपहरण’ के समान है।



**आदर्श स्थिति:** संतानोत्पादन से पूर्व एक-दूसरे को मानसिक, बौद्धिक व आर्थिक रूप से समर्थ बनाना अनिवार्य है।

# अदूरदर्शिता का दुष्परिणाम: बहुप्रजनन



**शारीरिक प्रभाव:**  
पत्नी के स्वास्थ्य का  
असमय क्षरण और  
स्थायी अशक्तता।



**आर्थिक प्रभाव:** महँगाई के  
दौर में लालन-पालन, उच्च  
शिक्षा व आवास का  
भारी आर्थिक संकट।



**सामाजिक प्रभाव:** विपन्न  
परिस्थितियों में पला असहाय  
बालक समाज और राष्ट्र  
के लिए भारी बोझ।

**मूल कारण: कामाचार व अनियंत्रित सन्तानोत्पादन।**

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# अश्लील चिन्तन का बौद्धिक और मानसिक सर्वनाश (वैज्ञानिक तथ्य)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



कामुकता  
व अश्लील  
चिन्तन

मस्तिष्क  
की ऊर्जा का  
अत्यधिक  
क्षरण

बौद्धिक  
प्रतिभा और  
उच्चस्तरीय  
चिन्तन क्षमता  
का हास

जीवनी  
शक्ति का  
नाश

वैज्ञानिक तथ्य: यह केवल शारीरिक क्षति नहीं है। दुश्चिन्तन मनुष्य की उच्चस्तरीय कार्य करने की क्षमता को नष्ट कर देता है, जो नशेबाजी के समान एक आत्मघाती कदम है।

# बीसवीं/इक्कीसवीं सदी की महती आवश्यकता: संयम



**निष्कर्ष:** बढ़ती जनसंख्या का अभिशाप प्रगति को निगल रहा है। सामर्थ्य को व्यर्थ होने से बचाकर उसे लोकहित (नारी-उत्कर्ष) में लगाना ही इस युग की बुद्धिमानी है।

वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही  
जिन्दा रहेगा। ज्ञान  
शरीर का प्रकाश  
जन-जन के बीच में  
पहुँचना ही चाहिए और  
आप सबसे कहियेगा —  
सब बच्चों से कहियेगा  
कि मेरे ज्ञान शरीर  
को मेरे  
क्रान्तिधर्मी साहित्य के  
रूप में जन-जन तक  
पहुँचाने का प्रयास  
करें।” — पूज्य  
गुरुदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ  
पण्डित श्रीराम शर्मा  
आचार्य (गायत्री  
परिवार के संस्थापक)

# नारी जागरण: पूर्ण रूपांतरण का मार्ग



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# नर और नारी: एक समान



- दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किसी के भी बिना मानवता अधूरी है।
- अहंकार और सदियों पुराने पक्षपात को त्यागकर सहयोग की नीति अपनाना ही एकमात्र मार्ग है।
- नारी-जागरण केवल महिलाओं का उद्धार नहीं है, अपितु पूरे विश्व के कल्याण का मूल आधार है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)